ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

जिला शाहजहाँपुर के संदर्भ में जन्मदर तथा मृत्यु दर का इतिहास

History of Birth Rate and Mortality in The Context of District Shahjahanpur

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

विकास खुराना
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
एसएस पी.जी. कॉलेज,
शाहाजहाँपुर, भारत

सारांश

उत्तर प्रदेश का जिला शाहजहाँपुर बरेली मंडल के अंतर्गत आता है। ब्रिटिश काल मे यह जिला अपनी आबोहवा के लिये सुप्रसिद्ध था,यहाँ तक कि यहाँ की जलवायु पूरे आगरा अवध प्रान्त में श्रेष्ठ बताई गई थी किन्तु यह स्थिति शहर के लिये ही सत्य कही जा सकती है। जिले में असंख्य नदियों के अवसादों से जिला मलेरिया इत्यादि बीमारियों का घर बन गया था। ब्रिटिश काल मे जिले में महामारियों के प्रकोप तथा जन्म मृत्यु दर को यह शोध पत्र रेखांकित करता है।

The district of Uttar Pradesh falls under Shahjahanpur Bareilly division. During the British era, this district was well known for its climate, even the climate here was said to be the best in the entire Agra Awadh province, but this situation can be said to be true for the city itself. District Malaria etc. due to the sediments of numerous rivers in the district. Had become a home for diseases. This research paper outlines the outbreak and birth rate of epidemics in the district during the British period.

मुख्य शब्द : शाहजहाँपुर, मलेरिया, ब्रिटिश, रेली जन्म,मृत्यु, ब्रिटिश, गजेटियर शाहजहाँपुर।
Shahjahanpur, Malaria, British, Reilly Birth, Death, British, Gazetteer Shahjahanpur.

प्रस्तावना

उत्तर प्रदेश का जिला शाहजहाँपुर गर्रा तथा खनौत के बीच मे स्थित है, आश्चर्यजनक रूप से इस शहर की आबोहवा इतनी अच्छी बनी रही जिसके चलते यह ब्रिटिश काल मे पूरे सयुक्त प्रान्त में चर्चित रहा किन्तु जिले के संदर्भ में स्थिति विपरीत थी। जिले से तमाम नदियां गुजरती है, इनमे से अधिकांश वर्षा से बनी झीलों से बनी जिनमे न तो वेग है और न ही नियमित प्रवाह, दलदल में कारण जिला मलेरिया का घर माना जाने लगा। 1909 में प्रकाशित हुए नेविल्स के जिला गजेटियर से यहां महामारियों का इतिहास मिलता है, जिसके अनुसार जिले के उत्तर में फैले जंगली इलाके तथा दक्षिण में दलदली भूमि ने यहाँ महामारियों को फैलने में मदद की। पहली बार सन 1865 में जिले में स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी को जुटाया गया किन्तु आकड़ो के संकलन की प्रक्रिया खराब तथा दोषपूर्ण थी,सन 1872 में एक नई प्रणाली अपनाई गई जिसके अंतर्गत पुलिस के साथ मिलकर आंकड़े जुटाए जाने थे, यह प्रणाली भी बाद में रद्द कर दी गयी क्योंकि आकड़ो का ठीक संकलन नही हो पा रहा था।सन 1880 में पिछले पांच वर्षों में औसत मृत्यु दर 38,343 थी, यह 40.9 व्यक्ति प्रति मील बनता है। यद्यपि यह आंकड़े प्रतिनिधि आंकड़े है इसमे निश्चित संख्या पाने के लिये इस संख्या में में थोड़ी बढ़ोतरी की जानी आवशयक है। 1878 में पूरे भारत मे अकाल पड़ा जिला उससे अछूता नही था यही कारण है कि मृत्यु अधिक संख्या में घटी, अगले वर्ष समावेशी सुधार प्रदर्शित हुआ। इस समय यह संख्या 31062 अथवा 36.25 व्यक्ति प्रति मील थी।1881 से 90 के दशक में भी अच्छी वर्षा से मृत्यु की दर 35.33 व्यक्ति प्रति मील रही हालांकि यह संख्या भी कुछ बढ़ी हुई प्रतीत होती है,वर्ष 1907 तक औसत मृत्यु 3787 वार्षिक थी जो 41 व्यक्ति प्रति मील बनता है। अगर तीस वर्षों का औसत निकाला जाए तो यह 38. 12 व्यक्ति प्रति मील रहा। यह संख्या निकटवर्ती जिलों में बरेली से उच्च तथा खीरी, हरदोई, बदायू से निकट था।

अध्ययन का उद्देश्य

सबेलर्टन तथा स्थानीय इतिहास की सारगर्भिता को जिला शाहजहाँपुर के संदर्भ में रेखांकित करने के उद्देश्य से उक्त शोध पत्रों को लिखा गया। यह शोधपत्र जिले के इतिहास को पुनः लिखने के क्रम में लिखे जा रहे शोध पत्रों की श्रृंखला से है।

विषय विस्तार

जिले की जन्मदर अप्रत्याशित रूप से उच्च थी, 1881 से 90 तक इसका औसत 46.2 तथा अगले दशक में 42 रहा जबकि सन 1900 से 1907 तक यह प्रतिवर्ष 53.5 जन्म प्रति मील से बढ़ा। सयुक्त प्रान्त के किसी भी जिले की तुलना में यह संख्या पार नही हुई थी। जिले में वर्ष 1896–97 में जब जलवायु प्रतिकूल दशा में थी तब बड़ी संख्या में मौते दर्ज हुई थी, इस वर्ष म्रत्यु दर ने जन्म दर को पीछे छोड़ दिया, इस वर्ष ज्यादातर मौते बुखार से हुई थी। 1891 से ही लगातार बुखार मृत्यु के अग्रणी कारकों में से एक था। 1881– 90 तक कस मध्य में ज्वर से होने वाली मृत्यु 24.8 व्यक्ति प्रति मील थी जो अगले दशक में बढ़कर 24.8 व्यक्ति प्रति वर्ग मील हो गयी। 1900 स्व 1907 तक यह 31.08 प्रति वर्ग मील रही। यह आंकड़े संतोषजनक नही है किन्तु यह अन्य जिलों की तुलना में सामान्य आंकड़े ही बताते है। सामान्य स्थिति में इनमे एक दोष लेखन परिपाटी का है। ज्यादातर गाँवो के चौकीदार ही इन कारकों को लेखनबद्ध करते थे, बुखार कई रोगों में आता है किंतु लेखन करते समय उनमें कोई विशिष्टिकरण नही किया गया।

उदाहरण रुप से निमोनिया तथा इंफ्लेजुआ में भी समान्यता ज्वर आता है, दोनो ही सामान्य बीमारियां है किंतु हैं भिन्न। दूसरी ओर मलेरिया से भी होने वाली मौते एक बड़ी वजह है,इससे प्रभावित होने वाला क्षेत्र उत्तर में जंगलों के कारण खुटार तथा दलदली भूमि का जंगली क्षेत्र जलालाबाद है। हालांकि लगातार प्रयासो से इसका क्षेत्र कम किया जा रहा है। समाज मे आती जागरूकता भी बीमारियों से लड़ने में मदद देती आ रही है। अब लोग बड़ी मात्रा में कुनैन का प्रयोग कर रहे है। हैजा भी एक स्थानीय महामारी है, यद्यपि इससे होने वाली मौते पर्याप्त संख्या में घटित हुई है किंतु कुछ अवसरों पर यह तीव्रता के साथ प्रस्फुटित हुई।

सन 1880 में हैजे से मरने वाले लोगो की संख्या 5735 थी, यह 1890 तक 1.91 व्यक्ति प्रति मील रही। फिर भी अधिकतम प्रकोप 1882,1886,1890 में रहा, 1890 में रिकार्ड 7046 मौते रजिस्टर की गई। अगले दशक में पहले पांच वर्ष अधिक वर्षा तथा आगे के पांच कम वर्षा के क्षेत्र थे। इस दशक में चार बेहद तीव्र तथा दो कम आवेश की बीमारियां उभरी, जिनसे औसत मृत्यु दर 2000 के आसपास थी। फिर भी सांख्यिकी आकड़ो को देखकर लगता है कि वर्ष 1909 तक जिला महामारियों से मुक्त हो चला था। इस अवधि में औसत मृत्यु दर 7 व्यक्ति प्रति वर्ग मील पर आ गयी। कम मृत्यु दर की एक प्रमुख वजह पानी की सुचारु सप्लाई, रोकथाम के अन्य उपाय थे जिनका असर देरी से ही सही पड़ना शुरू हो गया था, हालांकि रोकथाम के सभी उपाय देर से हुए किन्तु उनमें असर पड़ना शुरू हो गया। चेचक पहले के दिनों में बड़ी विनाशकारी थी वर्ष 1878 में इसके कारण तकरीबन 3835 लोग काल के ग्रास में समा गए। तत्पचात यह वर्ष 1883 में बड़े पैमाने पर फैली,इस वर्ष इसकी एक विशेषता ज्वर का न आना थी। 1897 में इस बीमारी से 2705 लोगो की मृत्यु हुई। 1881 से 90 तक इस बीमारी का कुल औसत 1.2 मृत्यु प्रति वर्ग मील था।जो अनुवर्ती दशक में घटकर .56 मील हो गया। इसका कारण बीमारी की रोकथाम के लिये होने वाले गम्भीर प्रयास थे। 1901 से 7 तक इसका आंकड़ा .8 व्यक्ति प्रति मील पर आ गया।यह सुधार स्थायी और व्यापक था। ऐसा विषयकर टीकाकरण से ही सम्भव हुआ।वर्ष 1865 तक टीकाकरण सरकारी दवाखानों में किया जाता था किंतु प्रबंध व्यवस्थित नही थे था जागरूकता फैलाने के लिये कोई विशेष प्रयास नही किये जाते थे। बाद के वर्षो में टीकाकरण के लिये विशेष स्टाफ की नियुक्ति हुई। जागरूकता के प्रयासों के कारण लोगो की शंकाएं दूर हुई तथा कोई उल्लेखनीय विरोध दर्ज नही हुआ। 1878 में ही छोटी चेचक का प्रकोप प्रस्फुटित हुआ। 1890 में दशक की समाप्ति होने तक औसत 16082 लोगो को प्राथमिक उपचार के तहत टीका लगाया गया, अनुवर्ती दशक में यह 23,918 हुआ तथा पिछले सात वर्षो में यह 23,918 हुआ तथा पिछले सात वर्षों में 33037 औसत से टीकाकरण का कार्य सम्पन्न किया गया। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि विगत तीस वर्षो में तकरीबन सात लाख लोगों को टीका लगाया जा चुका है। इन्ही सात वर्षों में तकरीबन 23 प्रतिशत स्थनीय निवासियों को टीके लागये गए जो पूरे संयुक्त प्रांत में सर्वाधिक है।इसके लिये एक सर्जन सहित कुल 20 लोगो का स्टाफ सक्रिय था।

शाहजहाँपुर तथा तिलहर नगर पालिका सीमा के अंतर्गत यह पूर्णरूप से अनिवार्य था।अन्य बीमारियां जैसे चेचिश, बाउल कम्प्लेंट, आंत के विकार इत्यादि के आंकड़े विश्वसनीय नही है। 1878 में कुल 14711 मौते आंत के विकार से दर्ज हुई।सन 1902 में जिले में प्लेग फैला,इसका कारण जिले में बाहर से एक संक्रमित व्यक्ति का आना था। वर्ष 1903 में इससे छह मौते हुई,1904 तक इसने पूरे जिले को आगोश में ले लिया,1907 टका इससे औसतन 1279 मौते वार्षिक दर्ज हुई इसमे 1907 का वर्ष समाहित है।

निष्कर्ष

प्लेग के निवारण के लिये आइसोलेशन, जिला बदर इत्यादि लागू किये गए,टीकाकरण का प्रभाव ज्यादा नही था जिसके चलते कठोर नीति लागू की गई।1909 का गजेटियर शारीरिक अपंगों के बारे में भी सूचना देता है। 1901 में कुल 1873 लोग अंधेपन का शिकार थे,जबकि इससे पिछले बीस वर्षों में यह आंकड़ा 3903 का था।धूल भरी अँधियो से यह समस्या आम है। चेचक के उपायों की शिथिलता भी इसका एक बड़ा कारण रही ।इस समय जिले में 124 मानसिक रोगी तथा 300 बहरापन के शिकार लोग थे। जिले के उत्तरी भाग में घेंघा प्रमुख रोग था वर्ष 1910 तक इसके कारण अज्ञात थे और इसे नदियों के पानी को जोड़कर देखा जाता था। 1881 में कुष्ठ रोगी 459 थे जो 1907 में घटकर 240 हो गए।सयुक्त प्रान्त के

अन्य जिलो के मुकाबले यह संख्या अधिक थी, बीमारी को प्रचलित सिद्धान्तों से जोड़कर देखा जाता था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शाहजहाँपुर गजेटियर,1909*
2. *शाहजहाँपुर गजेटियर,1988*
3. *आधुनिक भारत : यशपाल ग्रोवर,*
4. *शाहजहाँपुर : ई फेक्ट बुक।*
5. *आधुनिक भारत : एल पी शर्मा।*
6. *शाहजहाँपुर का इतिहास : डॉ एनसी मेहरोत्रा*